इब्रानियों की पुस्तक

अध्याय 1

इब्रानियों की पुस्तक की पृष्ठभूमि और उद्देश्य

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
पृष्ठभूमि 1
लेखक 1
पहचान 2
पार्श्वचित्र 3
मूल पाठक 5
यहूदी 6
यूनानी दृष्टिकोणवाले यहूदी 6
अपरिपक्व 6
सताए हुए 7
धर्मत्याग की कगार पर 8
लेखन का समय 9
उद्देश्य 10
उपदेशों की गहनता 11
आवृत्ति 11
आलंकारिक शैली 12
उपदेशों का लक्ष्य 13
स्थानीय शिक्षाओं को ठुकराना 14
यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहना 17
उपसंहार 18

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इब्रानियों की पुस्तक

अध्याय एक

इब्रानियों की पुस्तक की पृष्ठभूमि और उद्देश्य

परिचय

मसीह के अनुयायियों ने पूरे इतिहास के दौरान सताव को सहा है। संपत्ति की चोरी, मारपीट, कारावास और शहादत असँख्य मसीहियों के जीवन का भाग रहा है। यदि कुछ रिपोर्ट्स की मानें तो मसीह के अनुयायी हमारे समय में सबसे अधिक सताव का सामना कर रहे हैं।

हममें से जो ऐसे दुःख नहीं उठा रहे हैं, उनके लिए सताव के कारण से आनेवाली परीक्षाओं की कल्पना करना कठिन है। ऐसे मसीही जो शांति और सुरक्षा में जीवन बिताते हैं, वे बिना किसी खतरे के भी अक्सर अपने विश्वास से समझौता कर लेते हैं। परंतु क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि अपने आप को, अपने जीवन साथी को, अपने बच्चों को और अपने सबसे गहरे मित्रों को बड़े खतरे से बचाने के लिए अपने विश्वास के साथ समझौता करने की परीक्षा कितनी बड़ी होगी? इन परिस्थितियों में हम अपने साथी विश्वासियों को संभवतया कैसे उत्साहित कर सकते हैं?

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के सामने यह चुनौती थी। उसने मसीहियों के एक ऐसे समूह को यह पत्र लिखा जिन्होंने अतीत में दुःख उठाया था तथा अब और भी अधिक दुःख झेलने वाले थे। वर्षों पहले उन्होंने अच्छा जीवन व्यतीत किया था, परंतु इब्रानियों के लेखक को यह डर था कि वे अब और अधिक सताव से बचने के लिए शायद मसीह से फिर जाएँगे।

यह *इब्रानियों की पुस्तक* की हमारी श्रृंखला का पहला अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक "इब्रानियों की पुस्तक की पृष्ठभूमि और उद्देश्य" दिया है। इस अध्याय में हम कुछ ऐसे दृष्टिकोणों का परिचय देंगे जो इस जटिल पुस्तक की हमारी व्याख्या में हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

जैसे कि हमारा शीर्षक सुझाव देता है, हम इब्रानियों की पुस्तक की पृष्ठभूमि और उद्देश्य को दो तरीकों से देखेंगे। पहला, हम पुस्तक की पृष्ठभूमि पर ध्यान देंगे। और दूसरा, हम उस व्यापक उद्देश्य को सारगर्भित करेंगे जिसके लिए इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई थी। आइए इब्रानियों की पुस्तक से संबंधित पृष्ठभूमि के कुछ महत्वपूर्ण विषयों की रूपरेखा के साथ आरंभ करें।

पृष्ठभूमि

हम तीन परस्पर संबंधित विषयों पर विचार करते हुए इब्रानियों की पृष्ठभूमि की खोज करेंगे। हम सबसे पहले इसके लेखक पर ध्यान देंगे। फिर हम मूल पाठकों की जांच करेंगे। अंत में, हम उस समय के बारे में अध्ययन करेंगे जब इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई थी। आइए पहले इब्रानियों के लेखक को देखें।

लेखक

आरंभ से ही, इब्रानियों के लेखक के विषय में विभिन्न मत रहे हैं। हमारे उद्देश्यों के लिए हम दो विषयों को ही देखेंगे। पहला, हम लेखक की पहचान पर चर्चा करेंगे। और दूसरा, हम इस पुस्तक की कुछ विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए लेखक का एक पार्श्वचित्र बनाएँगे। आइए लेखक को पहचानने के साथ आरंभ करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पहचान

इब्रानियों के लेखक को पहचानना उतना सरल नहीं है जितना कि नए नियम की कई अन्य पुस्तकों के साथ है क्योंकि इसके लेखक ने अपने बारे में कुछ नहीं बताया है। धर्माध्यक्षीय युग से ही सिकंदरिया के क्लेमेंट, जिसका जीवनकाल 150 से 215 ईस्वी के बीच था, और सिकंदरिया के ओरिगन, जिसका जीवनकाल 185 से 254 ईस्वी के बीच था, ने माना था कि उनके समय में इब्रानियों के लेखक के बारे में विभिन्न मत थे। आरंभ से, प्रेरित पौलुस को ही अक्सर इसका लेखक माना जाता था, परंतु विद्वानों ने बरनबास, लूका, अपुल्लोस और यहाँ तक कि रोम के क्लेमेंट के नामों का भी सुझाव दिया था।

लगभग 325 ईस्वी में, कलीसियाई इतिहासकार येसुबियस ने अपनी पुस्तक *कलीसिया का इतिहास* में पुस्तक 6 के अध्याय 25 के खंड 14 में ओरिगन के दृष्टिकोण का उल्लेख किया है। वहाँ हम यह पढ़ते हैं :

> **अब [इब्रानियों का] पत्र किसने लिखा, इस बात की सच्चाई केवल परमेश्वर जानता है।**

ओरिगन की टिप्पणी यह दर्शाती है कि वह और उसके समय के कई अन्य लोग इस विषय पर कितने अनिश्चित थे। और बाइबल के वर्तमान के अनेक विद्वानों के साथ भी ऐसा ही है। केवल परमेश्वर ही निश्चित रूप से जानता है कि इस पुस्तक को किसने लिखा है।

दुखद रूप से, इब्रानियों की पुस्तक के लेखक से संबंधित प्रश्नों और झूठी शिक्षावाले समूहों द्वारा इसके दुरूपयोग के तरीकों ने धर्माध्यक्षीय समय में कुछ लोगों को इस विषय के प्रति संदेह में डाल दिया कि क्या इब्रानियों की पुस्तक को नए नियम के कैनन में सम्मिलित किया जाना चाहिए या नहीं। निस्संदेह रोम के क्लेमेंट, जिसकी मृत्यु लगभग 99 ईस्वी के दौरान हुई, जैसे मुख्य विद्वानों ने इब्रानियों की पुस्तक को नए नियम की अन्य पुस्तक की समानता में ही रखा। और जस्टिन मार्टियर, जिसका जीवनकाल 100 से 165 ईस्वी के बीच था, ने भी ऐसा ही किया। परंतु इब्रानियों की पुस्तक को लगभग 144 ईस्वी में लिखे गए मार्शियानाईट कैनन, और लगभग 170 ईस्वी में लिखे गए मुराटोरियन कैनन में शामिल नहीं किया गया। परंतु धर्माध्यक्षीय अवधि के अंत तक पूर्वी और पश्चिमी कलीसिया के अधिकांश प्रभावशाली व्याख्याकारों ने इब्रानियों को कैनन के भाग के रूप में स्वीकार कर लिया था। और वे आम तौर पर प्रेरित पौलुस को इसका लेखक मानने पर सहमत हुए।

संपूर्ण मध्यकालीन अवधि में अधिकतर अग्रणी विद्वानों ने यह मानना जारी रखा कि पौलुस ने इब्रानियों की पत्री को लिखा था। परंतु धर्मसुधार के दौरान प्रोटेस्टेंट धर्मसुधारकों ने पौलुस के लेखक होने के पारंपरिक दृष्टिकोण सहित कई कलीसियाई परंपराओं पर सवाल उठाए। मार्टिन लूथर ने सुझाव दिया कि अपुल्लोस इसका लेखक था। जॉन कॉल्विन ने किसी विकल्प का सुझाव तो नहीं दिया, परंतु उसने बल दिया कि इस पुस्तक का लेखक पौलुस नहीं हो सकता।

आज अधिकाँश व्याख्याकार पौलुस को इसका लेखक नहीं मानते। हम इस विचारधारा के तीन कारणों को देखेंगे। पहला, जैसे कि हम पहले ही देख चुके हैं, इस पुस्तक का लेखक अपरिचित है, और पौलुस की रीति थी कि वह अपने पत्रों में अपना नाम दर्शाता था। वास्तव में, जैसे कि 2 थिस्सलुनीकियों 2:2 स्पष्ट करता है, पौलुस इस बात से बहुत चिंतित था कि लोग उसके नाम से पत्र लिख रहे थे। इसलिए, ऐसा नहीं लगता है कि यदि उसने इब्रानियों की पुस्तक लिखी होती तो वह अपना नाम दर्शाने से चूकता।

दूसरा, इब्रानियों की पुस्तक ऐसे विषयों पर बल देती है जिन पर पौलुस के पत्रों में अधिक ध्यान नहीं दिया गया है। उदाहरण के लिए, इब्रानियों के लेखक ने मलिकिसिदक का उल्लेख तीन बार किया। उसने पुराने नियम के मिलापवाले तंबू की ओर ध्यान आकर्षित किया। और उसने मसीह के महायाजक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

होने पर विस्तार से चर्चा की। इन सब बातों को यदि जोड़कर देखें तो ये विषय इब्रानियों की पुस्तक को उन पुस्तकों से अलग करते हैं जिनके बारे में हम जानते हैं कि उन्हें पौलुस ने लिखा है।

तीसरा, पौलुस के इसके लेखक होने के प्रति संदेह का सबसे मजबूत कारण वह तरीका है जिसमें इब्रानियों के लेखक ने स्वयं को यीशु के पहली पीढ़ी के अनुयायियों से दूर रखा। इब्रानियों 2:3 के शब्दों को सुनिए :

> ऐसे बड़े उद्धार ... की चर्चा पहले-पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें इसका निश्चय हुआ (इब्रानियों 2:3)।

यहाँ ध्यान दें कि इब्रानियों के लेखक ने कहा कि कैसे उद्धार "की चर्चा पहले-पहल प्रभु के द्वारा हुई" — दूसरे शब्दों में, स्वयं यीशु के द्वारा — और "सुननेवालों के द्वारा हमें इसका निश्चय हुआ।" कहने का अर्थ यह है कि लेखक और उसके पाठकों के लिए सुसमाचार को उन लोगों द्वारा प्रमाणित किया गया जिन्होंने सीधे यीशु को सुना था। लेखक का यह मान लेना कि उसने अपने मसीही विश्वास को किसी दूसरे से पाया था गलातियों 1:1, 11 और 12, और 1 कुरिन्थियों 11:23 जैसे अनुच्छेदों के विपरीत दिखाई देता है जहाँ पौलुस ने बल दिया है कि उसने सुसमाचार को सीधे यीशु से प्राप्त किया था।

> "इब्रानियों की पुस्तक किसने लिखी?" का छोटा उत्तर यह है, हम नहीं जानते। हमारे पास कुछ सुराग तो हैं कि वह कौन था। पूरे कलीसियाई इतिहास में इस प्रश्न के बहुत से उत्तर दिए गए हैं। इसलिए कई वर्षों तक कलीसिया ने यही सोचा कि पौलुस ने इसे लिखा था। मैं सोचता हूँ कि शायद पौलुस ने इसे नहीं लिखा, क्योंकि इब्रानियों की पुस्तक और पौलुस के पत्रों में भिन्नताएँ हैं। उदाहरण के लिए, पौलुस अक्सर... या हमेशा स्वयं की पहचान कराता है और फिर उनसे बात करता है जिन्हें वह संबोधित करता है। इब्रानियों में ऐसा नहीं किया गया है। इब्रानियों में मसीह के महायाजक होने जैसे विषय हैं जो पौलुस के पत्रों में ज्यादा दिखाई नहीं देते। इसलिए शायद पौलुस इसका लेखक नहीं है। अन्य सुझाव बरनबास या अपुल्लोस — मार्टिन लूथर के विचार में इसका लेखक अप्पुलोस था — या प्रिस्का के विषय में रहे हैं। परंतु फिर भी हम इसके लेखक के बारे में नहीं जानते। मैं सोचता हूँ कि हम ज्यादा से ज्यादा यह कह सकते हैं कि इब्रानियों का लेखक दूसरी-पीढ़ी का विश्वासी था। अध्याय 2 में वह उनकी ओर संकेत करता है जिन्होंने मसीह से सुना और फिर जो कुछ उन्होंने मसीह से सुना था उसे दूसरों को सुनाया, इसलिए वह स्वयं को दूसरी पीढ़ी में रखता प्रतीत होता है।
>
> — डॉ. स्टीफन ई. विट्मेर

हमने इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के बारे में अध्ययन किया है और यह देखा है कि उसमें लेखक की कोई पहचान नहीं दी गई है। परंतु फिर भी हम लेखक के एक पार्श्वचित्र की रचना कर सकते हैं।

पार्श्वचित्र

समय की कमी के कारण हम लेखक के जीवन की दो ही स्पष्ट विशेषताओं को दर्शाएँगे।

यूनानी दृष्टिकोणवाला यहूदी — पहली, इब्रानियों का लेखक एक यूनानी दृष्टिकोणवाला यहूदी था। आज अधिकतर विद्वान सहमत हैं कि पौलुस ने इब्रानियों की पुस्तक को नहीं लिखा। अंततः ओरिगन के साथ यही निष्कर्ष निकालना उत्तम है कि केवल परमेश्वर ही जानता है। इब्रानियों के लेखक विषय पर वर्षों

से वाद-विवाद होता रहा है, परंतु यह वचन में मिलनेवाले साक्ष्यों से लेखक और उसके चरित्र के विषय में अधिक से अधिक सीखने में हमारे सामने रुकावट नहीं बनना चाहिए।

हम पुस्तक के लेख में देख सकते हैं कि यहूदी और यूनानी दोनों प्रभावों ने लेखक और उसकी पुस्तक को आकार दिया है। लेखक की मजबूत यहूदी धरोहर उसके पुराने नियम के ज्ञान से स्पष्ट हो जाती है। वास्तव में, उसने अपने 13 अध्यायों में पुराने नियम से कम से कम 31 बार उदधृत किया है।

ऐसा भी लगता है कि लेखक का पालन-पोषण मजबूत यूनानी संदर्भ में हुआ था। अतीत में, व्याख्याकारों ने लेखक के यूनानी दृष्टिकोणवाले यहूदी होने के प्रमाण के रूप में उसके द्वारा सेप्टुआजिंट, अर्थात् पुराने नियम के यूनानी अनुवाद, के प्रयोग की ओर संकेत किया था। परंतु पिछली सदी के अंतिम भाग में मृत सागर के प्रपत्रों की खोज ने प्रकट किया है कि जिन उद्धरणों को सीधे सेप्टुआजिंट से लिया गया समझा गया था वे गैर-पारंपरिक इब्रानी लेखनों से लिए गए भी हो सकते हैं। इस कारण, हम निश्चित नहीं हो सकते कि इब्रानियों के लेखक ने सेप्टुआजिंट का प्रयोग किया था।

परंतु इस खोज के बावजूद भी हम आश्वस्त हो सकते हैं कि इब्रानियों का लेखक यूनानी दृष्टिकोणवाला यहूदी था। उसकी शुद्ध यूनानी उसके यूनानी वातावरण में बड़े होने का मजबूत साक्ष्य देती है। और उसकी शब्दावली और शैली भाषा की निपुणता का साक्ष्य देती है जो कि लूका के लेखनों से भी बढ़कर है।

उत्साही बुद्धिजीवी — इब्रानियों का लेखक न केवल एक यूनानी दृष्टिकोणवाला यहूदी था, बल्कि हम अपने पार्श्वचित्र में यह भी जोड़ सकते हैं कि वह एक उत्साही बुद्धिजीवी भी था। व्याख्याकार व्यापक रूप से स्वीकार करते हैं कि इब्रानियों का लेखक एक बुद्धिजीवी था। इब्रानियों की पुस्तक में धर्मवैज्ञानिक तर्क-वितर्क शेष नए नियम की अन्य पुस्तकों से अधिक जटिल है। वास्तव में, स्वयं लेखक ने इब्रानियों 5:13-14 जैसे अनुच्छेदों में प्रबुद्ध धर्मवैज्ञानिक चिंतन की प्राथमिकता पर ध्यान दिया है जहाँ उसने दर्शाया कि भलाई और बुराई के बीच अंतर करने के लिए मसीह के अनुयायियों को धर्मशिक्षाओं में परिपक्व होना होगा।

> इब्रानियों के पत्र की विषय-वस्तु से हम लेखक के बारे में बहुत सी बातें कह सकते हैं। उनमें से एक है कि वह प्रतिभाशाली व्यक्ति था। उसे सेप्टुआजिंट अर्थात् पुराने नियम के यूनानी अनुवाद का संपूर्ण ज्ञान था। वह पवित्रशास्त्र के लेखनों को ऐसे रूपों में जोड़ना जानता था जो पारंपरिक यहूदी पाठकों को प्रेरित करें। वह शायद एक यूनानी दृष्टिकोणवाला यहूदी लेखक होगा, और शायद यूनानी दृष्टिकोणवाले पाठकों के लिए लिख रहा होगा। जब मैं "यूनानी दृष्टिकोणवाला यहूदी" कहता हूँ तो मेरे कहने का अर्थ यूनानी भाषा बोलनेवालों और शायद अपने गृह-क्षेत्र से बाहर रहनेवालों से है, परंतु वे अपनी यहूदी परंपरा के प्रति बहुत समर्पित हैं और उन्हें पवित्रशास्त्र का भी अच्छा ज्ञान है।
>
> — डॉ. क्रेग एस. कीनर

यद्यपि इब्रानियों के लेखक को एक बुद्धिजीवी माना जाना चाहिए, परंतु वह एक उदासीन, अनासक्त शिक्षक नहीं था। वह मसीही विश्वास के प्रति बहुत उत्साही था। उसकी भक्ति और अपने साथी मसीहियों के प्रति उसका उत्साह उसके लेखनों में स्पष्ट दिखाई देता है।

सुनिए किस प्रकार उसने इब्रानियों 10:33-34 में अपने पाठकों के साथ संवेदना प्रकट की :

> कभी-कभी तो यों कि तुम निन्दा और क्लेश सहते हुए तमाशा बने, और कभी यों कि तुम उनके साझी हुए जिनकी दुर्दशा की जाती थी। क्योंकि तुम कैदियों के दु:ख

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> में भी दु:खी हुए, और अपनी संपत्ति भी आनन्द से लुटने दी; यह जानकर कि तुम्हारे पास एक और भी उत्तम और सर्वदा ठहरनेवाली संपत्ति है (इब्रानियों 10:33-34)।

इसी प्रकार, अध्याय 12:1-2 में उसने यह कहकर मसीह के प्रति अपने उत्साह को प्रकट किया :

> इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ें, और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दु:ख सहा, और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा (इब्रानियों 12:1-2)।

इन और ऐसे ही अन्य अनुच्छेदों को यह महसूस किए बिना पढ़ना कठिन है कि यह लेखक शायद ही एक अवैयक्तिक विद्वान रहा हो। वह अपने पाठकों और मसीह के प्रति उत्साही था। यदि हम इस उत्साह को खो देते हैं तो हम इस पुस्तक की एक सबसे प्रमुख विशेषता को खो देंगे।

> हम लेखक के बारे में यह भी सीखते हैं कि वह वास्तव में उन लोगों के बारे में चिंतित था जिनके लिए वह लिख और प्रचार कर रहा था। वह उनकी आत्मिक उदासीनता के बारे में चिंतित था, और इसलिए वह बार-बार निर्बल होने या थक जाने या यहाँ तक कि धर्मत्याग के खतरे की ओर वापस आता है। और इसलिए, वह निश्चित रूप से एक उत्तम धर्मविज्ञानी और पवित्रशास्त्र का उत्तम व्याख्याकार था, परंतु साथ ही वह ऐसा व्यक्ति भी था जो अपने पाठकों को बहुत अच्छी तरह से, और स्पष्टतः व्यक्तिगत रूप से जानता था। उसे वास्तव में उनकी परवाह थी और वह उनकी आत्मिक यात्रा में उनकी सहायता हेतु धर्मविज्ञान, पवित्रशास्त्र की व्याख्या, और अनुप्रयोग को क्रमानुसार रखने का हर संभव प्रयास कर रहा था।
>
> — डॉ. एखार्ड श्नाबेल

इब्रानियों की पुस्तक की पृष्ठभूमि के विषय में हमारे अब तक के विचार-विमर्श में हमने पुस्तक के लेखक पर ध्यान दिया है। अब हमें अपने दूसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए : इब्रानियों के मूल पाठक।

मूल पाठक

इब्रानियों की पुस्तक अपने पाठकों को उनके नाम, नगर या क्षेत्र के आधार पर स्पष्ट रूप से नहीं दर्शाती है। फिर भी, सामान्यतः हम आश्वस्त हो सकते हैं कि लेखक ने ऐसे पाठकों के लिए लिखा जिनसे वह व्यक्तिगत रूप से परिचित था। पद 13:19-24 में लेखक ने अपने पाठकों को आश्वस्त किया कि वह फिर उनसे मुलाकात करना चाहता है। उसने तीमुथियुस के बारे में बात की जिसे उसने “हमारा भाई” कहा, और उसने इटली के लोगों के एक समूह का भी उल्लेख किया, जिन्हें उसके पाठक संभवतः जानते थे।

हम उसके मूल पाठकों के बारे में उन पाँच महत्वपूर्ण बातों को देखेंगे जिन पर हमें इब्रानियों की पुस्तक का अध्ययन करते समय ध्यान देना चाहिए।

यहूदी

पहली, यह सोचने का आधार है कि कम से कम मूल पाठकों का एक बड़ा हिस्सा यहूदी था। इब्रानियों 1:1 इसे स्पष्ट करता है :

> पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कीं (इब्रानियों 1:1)।

यहाँ लेखक ने दर्शाया कि कैसे परमेश्वर ने पुराने नियम में स्वयं को इस्राएल पर प्रकट किया था। परंतु ध्यान दें कि उसने पुराने नियम के इस्राएलियों को "हमारे बापदादों" — अर्थात् लेखक और उसके पाठको के पूर्वज कहा।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि टरटूलियन के समय से ही, जिसका जीवनकाल लगभग 155 से 230 ईस्वी के बीच था, इस पुस्तक से जुड़ा पारंपरिक शीर्षक *"प्रोस हिब्राईऊस,"* अर्थात् "इब्रानियों के लिए" रहा है।

यूनानी दृष्टिकोणवाले यहूदी

दूसरी, संभावना यह भी है कि पाठकों का बड़ा समूह यूनानी दृष्टिकोण रखनेवाला था। इब्रानियों की पुस्तक की विषय-वस्तु दर्शाती है कि पाठक उन धर्मवैज्ञानिक शिक्षाओं से अधिक परिचित थे जो फिलिस्तीन के भीतर के पारंपरिक यहूदी क्षेत्रों की अपेक्षा फिलिस्तीन से बाहर रहनेवाले यहूदियों में अधिक प्रचलित थीं।

कुछ व्याख्याकारों ने यह निर्धारित करने का प्रयास किया है कि पाठक फिलिस्तीन से बाहर कहाँ रहे होंगे। रोम के क्लेमेंट के पहले पत्र के द्वारा लगभग 95 ईस्वी में ही इस पुस्तक के उल्लेख ने कुछ लोगों को यह कहने को प्रेरित किया है कि पाठक रोम में रहते थे। इब्रानियों 13:24 का प्रयोग इस दृष्टिकोण के समर्थन के रूप में किया जाता रहा है क्योंकि यह "इटलीवाले" का उल्लेख करता है। ये सुझाव रोचक हैं, परंतु हम कुछ हद तक आश्वस्त होकर केवल यह कह सकते हैं कि मूल पाठकों में बहुत से यूनानी दृष्टिकोणवाले यहूदी शामिल थे जो फिलिस्तीन से बाहर रहते थे।

अपरिपक्व

तीसरी, इब्रानियों की पुस्तक के मूल पाठक अपरिपक्व थे। सुनिए किस प्रकार लेखक ने इब्रानियों 5:12 में उनका वर्णन किया है :

> समय के विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था, तौभी यह आवश्यक हो गया है कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए (इब्रानियों 5:12)।

ध्यान दें कि पाठक लंबे समय से विश्वासी रहे होंगे, इसीलिए लेखक ने कहा कि "समय के विचार से तो तुम्हें गुरू हो जाना चाहिए था।" उन्हें धर्मशिक्षा के संदर्भ में काफी उन्नति कर लेनी चाहिए थी। परंतु जैसे कि लेखक ने ध्यान दिया, उन्हें अब भी "परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए" जाने की आवश्यकता थी।

यह काफी रोचक है कि यद्यपि पाठक धर्मवैज्ञानिक रूप से अपरिपक्व थे, फिर भी इब्रानियों की पुस्तक में पूरे नए नियम की सबसे उन्नत, और जटिल धर्मवैज्ञानिक शिक्षाएँ पाई जाती हैं। पुस्तक की ये विशेषताएँ किस प्रकार पाठकों की अपरिपक्वता के साथ उपयुक्त बैठती हैं? इस परिस्थिति के अर्थ को

स्पष्ट करने का सबसे अच्छा तरीका इस बात को ध्यान में रखना है कि आरंभिक मसीहियों ने पहली सदी के यहूदी आराधनालयों में प्रयोग की जानेवाली सामान्य रीति को अपना लिया था।

हम लूका 4:16, प्रेरितों के काम 13:15 और 1 तीमुथियुस 4:13 जैसे अनुच्छेदों से यह सीखते हैं कि यहूदी आराधनालयों और मसीही कलीसियाओं के अगुवे अपनी-अपनी सभाओं में पवित्रशास्त्र के पढ़े जाने और उसकी व्याख्या का निरीक्षण करते थे। इसलिए इब्रानियों के लेखक ने नए नियम के कुछ सबसे गहरे लेखों को लिखा क्योंकि उसकी अपेक्षा थी कि कलीसिया के अगुवे अपनी सभाओं में उसकी पुस्तक को सिखाएँगे। अब इब्रानियों 5:11 में इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों के "ऊँचा सुनने" के कारण उन्हें डांटा। अतः यह संभव है कि मूल पाठकों का एक बड़ा समूह धर्मवैज्ञानिक रूप से इसलिए अपरिपक्व रहा होगा क्योंकि उन्होंने अपने अगुवों को उचित सम्मान नहीं दिया।

यह सुझाव इब्रानियों 13:17 से प्रमाणित होता है जहाँ लेखक ने अपने पाठकों से यह कहा :

> अपने अगुवों की आज्ञा मानो और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते हैं जिन्हें लेखा देना पड़ेगा; वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं (इब्रानियों 13:17)।

सताए हुए

चौथी, इब्रानियों के मूल पाठक सताए हुए थे। पहली शताब्दी के दौरान मसीहियों को सताए जाने के दो जाने-पहचाने सताव के समय थे, जिन्होंने इब्रानियों की पुस्तक के मूल पाठकों पर कम से कम अप्रत्यक्ष रूप से तो अवश्य प्रभाव डाला होगा। 49 ईस्वी में रोमी सम्राट क्लौदियुस ने यहूदियों को रोम नगर से निष्कासित कर दिया था। और 64 ईस्वी में सम्राट नीरो ने रोम के क्षेत्र में मसीहियों को सताया था।

जब हम इब्रानियों की पुस्तक पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मूल पाठकों ने पहले से ही सताव का सामना किया था, उन में कुछ उस समय भी कष्ट सह रहे थे, और लेखक की अपेक्षा थी कि भविष्य में उनमें से और लोग भी उससे अधिक कष्टों को सहेंगे।

पद 10:32-35 में लेखक ने उन कष्टों की ओर ध्यान आकर्षित किया जिनका अनुभव पाठकों में से कम से कम कुछ लोगों ने अतीत में किया था :

> परंतु उन पिछले दिनों को स्मरण करो, जिन में तुम ज्योति पाकर दुःखों के बड़े संघर्ष में स्थिर रहे ... इसलिये अपना हियाव न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है (इब्रानियों 10:32-35)।

यहाँ हम देखते हैं कि लेखक ने अपने पाठकों की सहनशक्ति के लिए उनकी सराहना की जब सताव के बीच "ज्योति पाकर दुःखों के बड़े संघर्ष में स्थिर रहे।" परंतु उसने उन्हें इस बात में भी उत्साहित किया कि वे "[अपना] हियाव न छोड़ें।" यहाँ "हियाव" के रूप में अनूदित यूनानी शब्द *पारेसिया* है जिसका अर्थ कई संदर्भों में गणमान्य लोगों के सामने "साहस," "हिम्मत" या "निडरता" है। शब्द का यह चुनाव दर्शाता है कि पाठक किसी तरह के सार्वजनिक या प्रशासकीय सताव का सामना कर रहे थे, और लग रहा था कि वे अपने साहस को खो देंगे।

पद 13:3 में लेखक ने सीधे तौर पर वर्तमान सतावों को दर्शाया जब उसने यह कहा :

> कैदियों की ऐसी सुधि लो कि मानो उनके साथ तुम भी कैद हो, और जिनके साथ बुरा बर्ताव किया जाता है, उनकी भी यह समझकर सुधि लिया करो कि हमारी भी देह है (इब्रानियों 13:3)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस पद से हम देख सकते हैं कि लेखक ने अपने पाठकों को उत्साहित किया कि वे “कैदियों की ऐसी सुधि [लें] कि मानो उनके साथ [वे] भी कैद हों।” और उन्हें याद करो जिनके साथ "बुरा बर्ताव किया जाता है।” यह स्पष्ट है कि उसके सारे पाठकों को केवल अतीत में ही सताव सहना नहीं पड़ा था।

अतीत और वर्तमान के सताव के अतिरिक्त, इब्रानियों के लेखक ने पद 12:3-4 में यह माना है कि उसके पाठक भविष्य में और भी अधिक कष्टों के आने के खतरे का सामना कर रहे थे। उसके उपदेश को सुनिए :

> इसलिये उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना विरोध सह लिया कि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दो। तुम ने पाप से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ नहीं की कि तुम्हारा लहू बहा हो (इब्रानियों 12:3-4)।

जैसे कि यह अनुच्छेद दर्शाता है, लेखक ने अपने पाठकों के विरूद्ध और अधिक सताव के आने की अपेक्षा की थी, और वह उनके अनुभव की इस बात के प्रति बहुत चिंतित था।

> इब्रानियों के मूल पाठकों ने कई बातों का सामना किया... जैसे कि लेखक अध्याय 10 में उल्लेख करता है, उन्होंने कई प्रकार के कष्टों का सामना किया था; उनमें से कइयों ने अपनी संपत्ति को खो दिया था, उनमें से कइयों को कैद कर लिया गया था, वे कई तरह के सार्वजनिक उपहास के पात्र बन गए थे। और जब वह लिखता है तो वह अब भी अपने पाठकों से विनती कर रहा है कि वे छावनी से निष्कासित कर दिए जाने के अपमान को मसीह के लिए सहन कर लें, जिसका वर्णन वह पुराने नियम के शब्दों में कर रहा है परंतु उसका अर्थ शायद यहूदी आराधनालय से निष्कासित करने का है, और यदि वे यरूशलेम जाते तो मंदिर से निष्कासित किए जाते, जो मेरे विचार से उसके पत्र लिखने तक गिराया नहीं गया था। अतः वे इस तरह के सतावों का सामना कर रहे थे। वह अध्याय 12 में कहता है कि उनका सताव इतना अधिक नहीं बढ़ा था कि उन्हें लहू बहाना पड़ा हो, परंतु फिर भी वह उनकी इस बात के प्रति आश्वस्त होने की जरूरत के प्रति परिचित दिखाई देता है कि उन्हें यीशु मसीह की विजय के द्वारा मृत्यु के डर से स्वतंत्र कर दिया गया है, जैसा कि वह अध्याय 2 में कहता है। इसलिए हो सकता है कि और अधिक हिंसक सताव आने वाला हो।
>
> — डॉ. डेनिस ई. जॉनसन

धर्मत्याग की कगार पर

पाँचवीं, जब इब्रानियों की पुस्तक के पाठक सताव का सामना कर रहे थे, तो उनमें से कम से कम कुछ धर्मत्याग की कगार पर थे। कष्टों के कारण केवल निराश या निर्बल होने की अपेक्षा, वे पूरी तरह से मसीह से दूर होने के खतरे में थे। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 10:26-27 में हम इस चेतावनी को पढ़ते हैं :

> क्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हाँ, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा (इब्रानियों 10:26-27)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हमें यहाँ स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि इब्रानियों का लेखक छोटे-मोटे पापों या गलतियों के बारे में चिंतित नहीं था। उसने अपने पाठकों को कड़ी चेतावनी दी क्योंकि जो मसीह से पूरी तरह से दूर हो जाते हैं, उनके "पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं" बचता। इब्रानियों की पुस्तक के मूल पाठकों में से कुछ के समान जब लोग मसीही विश्वास को त्याग देते हैं, तो वे यह प्रमाणित करते हैं कि उनमें उद्धार देनेवाला विश्वास कभी था ही नहीं। और इसी कारण, उनके पास परमेश्वर के "विरोधियों" के लिए निर्धारित "दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन" ही हो सकता है।

जैसा कि हम अपने अगले अध्याय में स्पष्ट करेंगे, ये और ऐसे ही अन्य अनुच्छेद यह नहीं दर्शाते कि सच्चे विश्वासी अपने उद्धार को खो सकते हैं। इसकी अपेक्षा, यह पद उनको दर्शाता है जो नए जीवन को प्राप्त किए बिना और धर्मी ठहराए जाने के बिना विश्वास का अंगीकार करते और इसकी अनेक आशीषों का अनुभव करते हैं। हर प्रकार से, यह स्पष्ट है कि इब्रानियों के मूल पाठकों में से कुछ विश्वास को त्यागने की बड़ी परीक्षा का सामना कर रहे थे।

अब जबकि हमने पुस्तक के लेखक और इसके मूल पाठकों पर ध्यान देने के द्वारा इब्रानियों की पुस्तक की पृष्ठभूमि की जांच कर ली है, तो हमें अपने तीसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए : वह समय जब इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई थी।

लेखन का समय

यद्यपि इब्रानियों की पुस्तक के लिखे जाने के सटीक समय का पता नहीं लगाया जा सकता, फिर भी इस पुस्तक की आरंभिक और नवीनतम समयावधि को दृढ़ता से स्थापित किया जा सकता है। हम सबसे पहले इस पुस्तक के आरंभिक संभावित समय या *टरमिनस ए क्वो,* को और फिर नवीनतम संभावित समय, या *टरमिनस एड क्वेम* को देखेंगे। पवित्रशास्त्र और इतिहास के प्रमाणों का प्रयोग करते हुए इन दोनों समयों को कुछ हद तक विश्वास के साथ निर्धारित किया जा सकता है।

एक ओर, इब्रानियों 13:23 इस पुस्तक के आरंभिक संभावित समय को अभिपुष्ट करने में सहायता करता है। इस पद में लेखक ने यह लिखा :

> **तुम्हें यह ज्ञात हो कि तीमुथियुस, हमारा भाई छूट गया है और यदि वह शीघ्र आ गया तो मैं उसके साथ तुम से भेंट करूँगा (इब्रानियों 13:23)।**

यहाँ हम देखते हैं कि तीमुथियुस हाल ही में कैद से छूटा था। हम नए नियम में कहीं और तीमुथियुस के कैद किए जाने के बारे में नहीं देखते। वास्तव में, पौलुस द्वारा अपनी मृत्यु से ठीक पहले लिखे अपने अंतिम पत्र, अर्थात् 2 तीमुथियुस की पुस्तक में तीमुथियुस यात्रा करने और पौलुस के लिए सामान लाने में स्वतंत्र था। फिर भी यह पद हमें बताता है कि जब इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई तब तीमुथियुस कैद में था और फिर उसे छोड़ दिया गया था। इसी कारण, इब्रानियों की पुस्तक पौलुस की मृत्यु के बाद लिखी गई होगी, जो लगभग 65 ईस्वी के दौरान हुई थी।

दूसरी ओर, इस पुस्तक का नवीनतम संभावित समय 95 ईस्वी के आसपास होगा, जो कि रोम के क्लेमेंट के द्वारा 1 क्लेमेंट में इब्रानियों की पुस्तक का उल्लेख करने से ठीक पहले का समय था।

इसके अतिरिक्त, कई व्याख्याकारों ने ध्यान दिया है कि इब्रानियों 5:1-3 जैसे अनुच्छेदों में लेखक ने महायाजक की बलिदान-संबंधी जिम्मेदारियों का वर्णन करने में वर्तमान काल का प्रयोग किया है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि अपनी शेष पुस्तक में लेखक ने अतीत की घटनाओं को दर्शाने में नियमित रूप से यूनानी भाषा के भूतकाल का प्रयोग किया। अतः हो सकता है कि इब्रानियों की पुस्तक के लिखे जाने के समय तक ये महायाजकीय गतिविधियाँ चल रही हों।

साथ ही, पद 8:13 में लेखक ने अपने पाठकों से कहा कि वे मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा के द्वारा स्थापित इन "लुप्तप्राय" बलिदानी गतिविधियों की ओर न मुड़ें। उसने समझाया कि नई वाचा के प्रकाश में, ये गतिविधियाँ शीघ्र "मिट जाएँगी।" हम जानते हैं कि महायाजक की गतिविधियाँ, और लेवियों की संपूर्ण बलिदानी प्रणाली 70 ईस्वी में आकर बंद हो गई थी, जब रोमियों ने यरूशलेम और इसके मंदिर को नष्ट कर दिया था। अतः ये प्रमाण इब्रानियों की पुस्तक के बारे में ऐसे समय का सुझाव देते हैं जो 65 ईस्वी में पौलुस की मृत्यु के बाद और 70 ईस्वी में मंदिर के विनाश से पहले का है।

इब्रानियों की पुस्तक की पृष्ठभूमि और उद्देश्य पर आधारित हमारे इस अध्याय में हमने इब्रानियों की पुस्तक की पृष्ठभूमि की कई विशेषताओं को देखा है। अब हम इस पुस्तक के व्यापक उद्देश्य को संबोधित करने की स्थिति में हैं। इब्रानियों की पुस्तक क्यों लिखी गई?

उद्देश्य

यह कहना उचित होगा कि इब्रानियों जैसी लंबी और जटिल पुस्तक को लिखते समय मन में कई अलग-अलग उद्देश्य होते हैं। परंतु इस अध्याय में हमारी रूचि मुख्य रूप से इस पुस्तक के व्यापक उद्देश्य को सारगर्भित करने की ही है। इस पुस्तक के प्रत्येक भाग में अलग-अलग बातों पर महत्व दिया गया है, और हम इन महत्वों की जांच अपने अगले अध्याय में करेंगे। इस समय हम यह देखना चाहते हैं कि कैसे इस संपूर्ण पुस्तक की रचना मूल पाठकों की विचारधाराओं, व्यवहारों और मनोभावों को प्रभावित करने के लिए की गई थी।

व्याख्याकारों ने इब्रानियों की पुस्तक के व्यापक उद्देश्य को कई रूपों में सारगर्भित किया है। परंतु इस अध्ययन के लिए हम इब्रानियों की पुस्तक के मूल उद्देश्य का वर्णन इस प्रकार करेंगे :

> **इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को स्थानीय यहूदी शिक्षाओं को ठुकराने और यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उत्साहित करने हेतु यह पुस्तक लिखी।**

लेखक के उद्देश्य का यह विवरण हमें इब्रानियों की पुस्तक में पाए जानेवाले मुख्य विचारों की ओर उन्मुख करने में सहायता करता है।

जैसे कि हमने अभी बताया है, इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को उत्साहित करने के लिए लिखा। सुनिए किस प्रकार पद 13:22 में स्वयं लेखक ने अपनी पुस्तक को चित्रित किया :

> **हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूँ कि इस उपदेश की बातों को सह लो (इब्रानियों 13:22)।**

यहाँ ध्यान दें कि लेखक अपने पाठकों से "विनती करता है" कि वे उसकी पुस्तक को "उपदेश की बातों" के रूप में लें। ये शब्द "मैं तुम से बिनती करता हूँ" यूनानी क्रिया *पाराकालेओ,* से आते हैं जो कि उसी वाक्य में "उपदेश" के रूप में अनूदित यूनानी संज्ञा का क्रिया रूप है।

उपदेश की शब्दावली का अर्थ "वक्ता के पक्ष में बुलाना" या "किसी को वक्ता के दृष्टिकोण को ग्रहण करने के लिए बुलाना" है। इसी भाव को लूका 3:18 में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की पश्चाताप के लिए तात्कालिक, प्रेरक आवश्यक बुलाहट के लिए इस्तेमाल किया गया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

रोचक बात यह है कि "उपदेश की बातें" वाक्यांश प्रेरितों के काम 13:15 में भी पाया जाता है जहाँ पिसिदिया के अंताकिया के यहूदी आराधनालय के लोगों ने पौलुस और उसके साथियों को निमंत्रण दिया कि वे पवित्रशास्त्र के पढ़े जाने के बाद "उत्साह का उपेदश" दें। यह भी संभव है कि शब्द "उपदेश की बातें" — या संदेश — पहली सदी का तकनीकी शीर्षक था जिसे आज हम प्रचार या संदेश कहते हैं।

> लेखक अपने लेखनकार्य को उपदेश की बातों के रूप में दर्शाता है — जैसा कि यह पद 13:22 में पाया जाता है — और इसका अर्थ है कि इब्रानियों की पुस्तक एक उपदेश है; यह एक संदेश या प्रचार के समान है। और इसलिए आलंकारिक शैली का प्रयोग वास्तव में पाठकों को इस बात में उत्साहित करने का एक माध्यम है कि वे परमेश्वर के पुत्र के रूप में और अपने प्रभु तथा उद्धारकर्ता के रूप में यीशु के प्रति अपने समर्पण में विश्वासयोग्य बने रहें। अतः इब्रानियों के पत्र की आलंकारिक शैली, या इब्रानियों का धर्मोपदेश लेखक को विषयों का विस्तृत रूप से वर्णन करने, यहूदी पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने, अर्थात् यहूदी पवित्रशास्त्र को अर्थपूर्ण रूप से स्पष्ट करने की अनुमति देता है, और फिर इसे बहुत ही मजबूती से प्रकट करने की अनुमति भी देता है ताकि पाठक स्पष्ट रूप से समझ जाएँ कि लेखक उससे क्या करवाना चाहता है, और उनसे क्या करवाना चाहता है। वह चाहता है कि वे उस उद्धार का अनुसरण करें जो मसीह ने उन्हें दिया है, जो परमेश्वर ने मसीह में प्रदान किया है।
>
> — डॉ. फ्रेडरिक लोंग

नए नियम के प्रत्येक पत्र में उसके पाठकों के लिए उपदेश निहित होते हैं। परंतु इब्रानियों की पुस्तक उपदेशों की गहनता के कारण नए नियम के अन्य पत्रों से बिल्कुल अलग दिखाई देती है।

लेखक के उद्देश्य को खोजने के लिए, आइए हम उन उपदेशों की गहनता को और अधिक निकटता से देखें जो पुस्तक में बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। और उसके बाद, हम इन उपदेशों के लक्ष्य को जांचेंगे कि लेखक की अपने पाठकों से कैसे प्रत्युत्तर की आशा थी। आइए पहले अपने पाठकों के लिए लेखक के उपदेशों की गहनता को देखें।

उपदेशों की गहनता

लेखक के उपदेशों की गहनता से हमारे अर्थ को और अधिक खोजने के लिए हम दो विषयों पर ध्यान देंगे : पहला, इस पुस्तक में उपदेशों की आवृत्ति पर, और दूसरा, इन उपदेशों के साथ जुड़ी लेखक की आलंकारिक शैली पर। आइए उपदेशों की आवृत्ति की जाँच करते हुए आरंभ करें।

आवृत्ति

लेखक के उपदेशों की आवृत्ति उसके संदेश की अत्यावश्यकता को समझने में हमारी सहायता करती है। ये उपदेश कई बार अस्पष्ट होते हैं, परंतु कम से कम 30 बार वे स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। कई जगहों पर लेखक ने उसका प्रयोग किया जिसे यूनानी व्याकरण जाननेवाले "होर्टेटरी सबजंक्टिव" कहते हैं। क्रिया के ये रूप आग्रह या विनती का अर्थ देते हैं और अक्सर इनका अनुवाद "आओ हम" यह या वह करें के रूप में किया जाता है। उदाहरण के लिए, 4:14, 16 में हम ऐसे दो उपदेशों को पढ़ते हैं :

> तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें ... इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बाँधकर चलें (इब्रानियों 4:14, 16)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

लेखक ने आज्ञासूचकों का प्रयोग करने के द्वारा भी अपने पाठकों को उपदेश दिए, जिनका अनुवाद हम अक्सर सीधे आदेश के रूप में करते हैं। उदाहरण के लिए, 12:12-16 में हम उपदेशों की इसी श्रृंखला को पढ़ते हैं :

> इसलिये ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो, और अपने पाँवों के लिये सीधे मार्ग बनाओ ... सबसे मेल मिलाप रखो, और उस पवित्रता के खोजी हो ... ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए ... ऐसा न हो कि कोई जन व्यभिचारी, या एसाव के समान अधर्मी हो (इब्रानियों 12:12-16)।

लेखक ने अपने पाठकों को कब-कब सीधे रूप में उपदेश दिया को ध्यान में रखने का एक महत्वपूर्ण कारण यह है कि पुस्तक के जटिल धर्मवैज्ञानिक चिंतन अक्सर पुस्तक को लिखने के लेखक के उद्देश्य को धुंधला कर देते हैं। वह अपने पाठकों को केवल धर्मवैज्ञानिक शिक्षाओं से अवगत कराना ही नहीं चाहता था। उसने उन्हें धर्मशिक्षा से इसलिए अवगत कराया कि वह उन्हें विभिन्न व्यवहारों और कार्यों को अपनाने के लिए प्रेरित कर सके। जब उसने अपनी पुस्तक को "उपदेशों की बातें" कहा तो उसका अर्थ यही था। यदि हम इस अत्यावश्यकता को ध्यान में नहीं रखते, तो हम इब्रानियों की पुस्तक के एक महत्वपूर्ण आयाम को खो देंगे।

हम देख चुके हैं कि कैसे लेखक के उपदेशों की गहनता उस आवृत्ति में प्रकट होती है जिसमें उसने अपने पाठकों को उत्साहित किया है। अब, आइए हम ध्यान दें कि कैसे लेखक की आलंकारिक शैली भी उसके पाठकों को उपदेश देने की उसकी इच्छा को प्रकट करती है।

आलंकारिक शैली

इब्रानियों की पुस्तक को अक्सर बहुत ही आलंकारिक शैली रखने के रूप में दर्शाया जाता है। इससे हमारा अर्थ यह है कि यह कई ऐसी साहित्यिक शैलियों का प्रयोग करती है जो पहली सदी की प्रेरक भाषणकला या अत्यावश्यक वाद-विवाद से जुड़ी हुई थीं। इनमें से कई आलंकारिक शैलियाँ नए नियम की अन्य पुस्तकों में कभी-कभी प्रकट होती हैं, परंतु हम उन्हें इब्रानियों की पुस्तक में अक्सर पाते हैं।

> इब्रानियों की पुस्तक शायद एक लेखक के विषय में नए नियम का एक सर्वोत्तम उदाहरण है जिसके पास मजबूत साहित्यिक और आलंकारिक दक्षताएँ हैं, और वे आलंकारिक दक्षताएँ लेखक के उद्देश्य को पूरा करने में वास्तव में सहायता करती हैं। वह मसीह, तथा पुरानी वाचा से बढ़कर नई वाचा की सर्वोच्चता को प्रकट करने का प्रयास कर रहा है, और वह यह आंशिक रूप से बहुत ही मजबूत और प्रेरक साहित्यिक तर्क के साथ करता है। और वह इसे पूरा करने के लिए कई विभिन्न संरचनात्मक विशेषताओं का प्रयोग करता है... अतः वह बहुत ही सुंदर रूप से आलंकारिक भाषा का प्रयोग पहले अपने पाठकों को आकर्षित करने के लिए, और फिर अपने तर्क के प्रति उन्हें विश्वस्त करने के लिए करता है।
>
> — डॉ. मार्क एल. स्ट्रॉस

एक आलंकारिक शैली, जिसे यूनानी भाषा में *सिनक्रीसिस* कहा जाता है, दो या अधिक चीजों के बीच तुलना करने का तरीका है जिसकी रचना वक्ता के दृष्टिकोण के प्रति श्रोताओं को विश्वस्त करने के लिए की गई है। उदाहरण के लिए, इब्रानियों की पुस्तक में *सिनक्रीसिस* 7:11-28 में पाई जाती है। वहाँ लेखक ने तर्क दिया था कि यीशु उत्पत्ति की पुस्तक में उल्लिखित राजकीय याजक मलिकिसिदक की रीति

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पर एक याजक और राजा था। परंतु अपनी इस मान्यता को बताने भर की अपेक्षा, इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने अपने पाठकों को मसीह और मलिकिसिदक के बीच तुलना के मजबूत आठ बिंदु प्रदान किए : उनके माता-पिता, उनकी वंशावली, उनके जन्म, उनकी मृत्यु, उनके पदभार, उनके कार्य, उनकी प्रतिष्ठा और उनकी उपलब्धियाँ। इन विस्तृत तुलनाओं की रचना उस दावे के प्रति सब संदेहों को दूर करने के लिए की गई थी कि यीशु महान, राजकीय महायाजक था।

इब्रानियों की पुस्तक में पाई जानेवाली एक और आलंकारिक शैली को *एग्जेम्पला* के नाम से जाना जाता है। *एग्जेम्पला* दृष्टांतों या उदाहरणों की सूची है जो किसी विशेष दृष्टिकोण के लिए एक आकर्षित करनेवाले तर्क की रचना करने हेतु एक के बाद एक आते जाते हैं। भाषण की यह तकनीक इब्रानियों 11 में विश्वासयोग्य लोगों की जानी पहचानी सूची में पाई जाती है। वहाँ लेखक ने इन नामों को सूची दी है : हाबिल, हनोक, नूह, अब्राहम, सारा, इसहाक, याकूब, यूसुफ, मूसा, इस्राएली, राहाब, गिदोन, बाराक, शिमशौन, यिफतह, दाऊद, शमूएल, और अन्य भविष्यद्वक्ता। इस लंबी सूची की रचना पाठकों को इस बात के प्रति प्रेरित करने के लिए की गई थी कि परमेश्वर के सेवकों को उनके सताव के दौरान विश्वासयोग्य बने रहना चाहिए।

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के द्वारा प्रयोग की गई तीसरी आलंकारिक शैली को इब्रानी अभिव्यक्ति *कोल वाहोमर* के नाम से जाना जाता है। यह अभिव्यक्ति यूनानी-रोमी और रब्बीवादी परंपराओं दोनों में जानी पहचानी है और इसका अनुवाद "हल्के से भारी," "कम से अधिक" या "सरल से जटिल" में किया जा सकता है। इस तरह का तर्क एक सरल आधार-वाक्य से शुरू होता है जो पाठकों के लिए विवाद का कारण नहीं होता। फिर यह और अधिक जटिल निष्कर्ष की रचना करता है जिस पर पाठक आरंभ में संदेह करते हैं, परंतु अब आसानी से स्वीकार कर सकते हैं। सरल शब्दों में कहें तो, यह तर्क कहता है कि क्योंकि सरल आधार-वाक्य सच्चा है, इसलिए और अधिक कठिन निष्कर्ष भी निश्चित रूप से सच्चा ही होगा। सुनिए किस प्रकार इब्रानियों 10:28-29 में यह आलंकारिक शैली प्रकट होती है :

> **जब मूसा की व्यवस्था का न माननेवाला, दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार डाला जाता है, तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पाँवों से रौंदा। (इब्रानियों 10:28-29).**

यहाँ लेखक एक ऐसे आधार-वाक्य के साथ आरंभ करता है जो पाठक समझते थे : मूसा की व्यवस्था को ठुकरानेवालों को मृत्युदंड दिया जाता था। तब वह अपने पाठकों को इस तर्क के साथ आगे बढ़ाता है कि वे "कितने और भी भारी" दंड को सहेंगे जिन्होंने मूसा से भी बड़े, अर्थात् "परमेश्वर के पुत्र को पाँवों से रौंदा।"

ये उदाहरण हमें लेखक के अभिप्रायों की अत्यावश्यकता को देखने में सहायता करते हैं। वह आश्वस्त था कि उसके पाठकों ने बहुत ही गंभीर परिस्थिति का सामना किया था और अब उनके लिए बहुत ही कठिन निर्णयों को लेने का समय आ गया था। इसलिए उन्हें सही निर्णय लेने के लिए प्रेरित करने हेतु वह जो कर सकता था, उसने किया।

अब जबकि हमने यह देख लिया है कि कैसे लेखक के उद्देश्य को उसके उपदेशों की गहनता के द्वारा मजबूती मिली, इसलिए हमें इस पुस्तक की दूसरी विशेषता की ओर मुड़ना चाहिए : इन उपदेशों का लक्ष्य।

उपदेशों का लक्ष्य

हम पहले ही देख चुके हैं कि इब्रानियों की पुस्तक के व्यापक उद्देश्य को इस तरह से परिभाषित किया जा सकता है :

> **इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को स्थानीय यहूदी शिक्षाओं को ठुकराने और यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उत्साहित करने हेतु यह पुस्तक लिखी।**

जैसा कि यह परिभाषा पुष्टि करती है, लेखक के उपदेशों का लक्ष्य द्विरूपी था। वह चाहता था कि उसके पाठक स्थानीय यहूदी शिक्षाओं को ठुकरा दें और वह चाहता था कि वे यीशु को मसीहा मानते हुए उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहें। आइए हम देखें कि कैसे लेखक ने अपने पाठकों से विनती की कि वे स्थानीय यहूदी शिक्षाओं को ठुकरा दें।

स्थानीय शिक्षाओं को ठुकराना

हमने देखा है कि इब्रानियों के पाठकों ने सताव का सामना किया था और यह सताव उन्हें धर्मत्याग की परीक्षा में डाल रहा था। परंतु यह वह परीक्षा नहीं थी जिसकी कल्पना हमने पहले की होगी। ऐसा लगता है कि जब इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई थी, तब मसीही यदि अपनी विशेष मसीही मान्यताओं को ठुकरा देते और अपने स्थानीय यहूदी समुदाय जैसे ही बन जाते, तो वे सुरक्षित रह सकते थे।

पहली सदी में यहूदियों को अक्सर विशेष करों का भुगतान करना पड़ता था, और वे समय समय पर सताव का सामना करते थे। परंतु अक्सर रोम के साम्राज्य में यहूदी समुदाय अपने विश्वास का पालन करने में स्वतंत्र थे। शुरू-शुरू में मसीहियों के लिए भी ऐसा ही था, क्योंकि वे यहूदी धर्म से बड़ी गहराई से जुड़े हुए थे। परंतु जैसे-जैसे समय बीतता गया, यहूदी समूह के रूप में मसीहियों की पहचान समाप्त होने लगी। वास्तव में, प्रेरितों के काम की पुस्तक दर्शाती है कि पौलुस के दिनों में ही यहूदी आराधनालयों ने मसीह के अनुयायियों को अस्वीकार कर दिया था और स्थानीय अधिकारियों को उनसे दुर्व्यवहार करने को उत्साहित किया था। पूरी संभावना है कि इब्रानियों की पुस्तक के मूल पाठक ऐसी ही परिस्थिति का सामना कर रहे थे। और उनके लंबे समय तक चले कष्टों ने उन्हें उनके स्थानीय यहूदी समुदाय की ऐसी शिक्षाओं को स्वीकार करने की परीक्षा में डाल दिया था जो मसीही विश्वास के विपरीत थीं।

यह रोचक है कि इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने ऐसे विषयों को संबोधित नहीं किया जो यहूदी पाखंड या रूढ़ीवाद से आम तौर पर जुड़े थे। ये विषय चाहे जितने भी महत्वपूर्ण थे, फिर भी वे इब्रानियों की पुस्तक में मुख्य रूप से नहीं पाए जाते। इसकी अपेक्षा, लेखक ने मुख्य तौर पर गलत मान्यताओं और रीतियों के बारे में बात की, विशेषकर उनके विषय में जो फिलिस्तीन के यहूदी धर्म की मुख्यधारा से बाहर रह रहे यहूदी समुदायों में विकसित हुई थीं। सुनिए इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने इब्रानियों 13:9 में क्या लिखा :

> **नाना प्रकार के विचित्र उपदेशों से न भरमाए जाओ, क्योंकि मन का अनुग्रह से दृढ़ रहना भला है, न कि उन खाने की वस्तुओं से जिन से काम रखनेवालों को कुछ लाभ न हुआ (इब्रानियों 13:9)।**

इस पद में लेखक ने "खाने की वस्तुओं" से दृढ रहने के विपरीत "अनुग्रह से दृढ़ रहने" पर बल दिया। इस बात पर ध्यान देना काफी चिरपरिचित जान पड़ता है। परंतु इस बात पर भी ध्यान दें कि यह उनमें से केवल एक उदाहरण है जिसे उसने "नाना प्रकार के विचित्र उपदेश" कहा। दूसरे शब्दों में, स्थानीय यहूदी समुदायों द्वारा सिखाई जानेवाली असामान्य और विचित्र शिक्षाएँ। अतः ये "विचित्र उपदेश" क्या थे जिनका अनुसरण करने की परीक्षा में पाठक पड़े थे।

पिछली सदी के दूसरे आधे हिस्से में, कुमरान नामक स्थान पर मृत सागर के हस्तलेखों की खोज के साथ इस प्रश्न के विषय में कई सहायक अन्तर्दृष्टियाँ सामने आई हैं। बहुत पहले खो चुके लेखनों के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

संकलन में पुराने नियम के लेखों के साथ-साथ बाइबल से बाहर के लेख भी थे जिन्होंने मृत सागर के आसपास रहनेवाले अलग-थलग यहूदी समुदाय की विशिष्ट शिक्षाओं को भी दर्शाया। इसमें *दी रूल ऑफ़ दी कम्युनिटी, दी डमस्कस कोवेनेंट, दी वॉर स्क्रॉल, दी मिद्राश ओन मेल्खिज़ेदेक,* और साथ ही *1 एनोख* के खंड जिसे "दी बुक ऑफ़ दी वाचर्स" और "दी बुक ऑफ़ ड्रीम्स" कहा जाता है, शामिल थीं। इन पुस्तकों में ऐसी कई शिक्षाएँ हैं जो इब्रानियों की पुस्तक में संबोधित धर्मवैज्ञानिक विषयों से काफी मिलती जुलती हैं।

अब यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि ये शिक्षाएँ केवल इसी समुदाय में ही नहीं पाई जाती थीं। भूमध्य सागर के निकट रहनेवाले अन्य यहूदी समुदाय भी ऐसे ही दृष्टिकोण रखते थे। वास्तव में, इफिसियों और कुलुस्सियों की पत्रियाँ अपने स्थानों में ऐसे ही विषयों पर बात करती हैं। फिर भी, यदि हम इब्रानियों की पुस्तक और कुमरान में मिली पुस्तकों में पाए जानेवाले समान विषयों पर ध्यान दें, तो यह हमें स्थानीय यहूदी मान्यताओं के विरूद्ध इब्रानियों की पुस्तक के कई उपदेशों को समझने में सहायता करेगा।

> निस्संदेह कुमरान के रेगिस्तान में पाए जानेवाले मृत सागर हस्तलेख बहुत ही रोचक प्रलेख हैं, और वे ऐसे कट्टरपंथी यहूदी समूह के द्वारा लिखे गए हैं जिसने मुख्यधारा के यहूदी समुदाय, विशेषकर जो मंदिर प्रांगण से संबंधित था, के विरूद्ध और उससे ऊपर स्वयं को रखा था। और इसलिए इब्रानियों की पुस्तक के लगभग समान रूप में ही ऐसा लगता है कि कुमरान के समूह के लोगों ने स्वयं को नई वाचा के अंतर्गत नए मंदिर के रूप में माना था। अब बहुत सी असमानताएँ भी हैं, क्योंकि पुरानी वाचा के कुछ रीति-रिवाज संबंधी पहलू थे जिन्हें कुमरान का समूह फिर से जागृत करना चाहता था, न कि उन्हें छोड़ देना जैसा कि इब्रानियों का लेखक सुझाव देता है।
>
> — डॉ. सीन मैक्डोन

इस अध्याय के लिए हम केवल ऐसे चार विषयों का ही संक्षेप में उल्लेख करेंगे जो इब्रानियों की पुस्तक और कुमरान के प्रलेखों में समान रूप में पाए जाते हैं।

रीति-रिवाज संबंधी भोजन — पहला, हम पहले ही देख चुके हैं कि इब्रानियों 13:9 में लेखक ने रीति-रिवाज संबंधी भोजन को खाने के एक विशेष उदाहरण के विरूद्ध बात की है।

कुमरान की कई प्रथाओं का वर्णन *दी रूल ऑफ़ दी कम्युनिटी* नामक पुस्तक में किया गया है। बहुत सी अन्य बातों के साथ-साथ, कुमरान के समुदाय में नियमित रूप से पवित्र समुदायिक भोजन का आयोजन किया जाता था जिसमें वे विशेष रूप से पवित्र किए गए भोजन को खाते थे।

मूल शिक्षाएँ — दूसरा, इब्रानियों की पुस्तक में संबोधित मूल शिक्षाओं का वर्गीकरण भी कुमरान के लेखों में भी पाया जाता है।

उदाहरण के लिए, इब्रानियों 6:1-2 में लेखक ने मन फिराने, विश्वास, शुद्धीकरण की रीतियों (या बपतिस्मों), हाथों को रखने, मृतकों के जी उठने, और अंतिम न्याय का उल्लेख किया। यह रोचक है कि कुमरान की *दी रूल ऑफ़ दी कम्युनिटी* तथा *दी वॉर स्क्रोल* पुस्तकें इन और ऐसे ही कई विषयों पर ऐसे रूपों में बहुत ध्यान देती हैं जो फिलिस्तीन के मुख्यधारा के यहूदी धर्म से अलग थे।

स्वर्गदूत — तीसरा, कुमरान का साहित्य हमें इब्रानियों की पुस्तक में स्वर्गदूतों पर दिए ध्यान को समझने में सहायता करता है। इब्रानियों की पुस्तक ने कई अनुच्छेदों में स्वर्गदूतों के विषय में मान्यताओं को संबोधित किया। इस प्रकार का ध्यान देना उन मान्यताओं के प्रत्युत्तर में था जो *दी रूल ऑफ़ दी कम्युनिटी, दी डमस्कस कोवेनेंट,* और *दी वॉर स्क्रोल* तथा "दी बुक ऑफ़ दी वाचर्स" और "दी बुक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

ऑफ़ दी ड्रीम्स" के नाम से प्रचलित *1 एनोख* के खंडों की शिक्षाओं के सदृश्य थीं। इन पुस्तकों ने भले और बुरे स्वर्गदूतों की शक्तियों, ईश्वरीय प्रकाशन के संदेशवाहकों के रूप में उनकी भूमिकाओं, तथा उस प्रभाव का गुणगान किया जो उनका उनसे निम्न स्तर मनुष्यों पर था। स्पष्ट है कि इब्रानियों की पुस्तक के मूल पाठक ऐसी शिक्षाओं के प्रति आकर्षित हो गए थे।

मलिकिसिदक — चौथा, कुमरान के प्रलेख हमें उस असामान्य रूचि को समझने में सहायता करते हैं जो इब्रानियों के लेखक की पुराने नियम के चरित्र मलिकिसिदक में थी।

लंबे समय तक, व्याख्याकारों को यह समझाने में कठिनाई होती थी कि इब्रानियों के लेखक के लिए मलिकिसिदक और यीशु के बीच तुलनाएँ इतनी महत्वपूर्ण क्यों थीं। परंतु कुमरान में मिले एक प्रलेख, जिसे अक्सर *11 कुमरान मेल्खिजेदेक* या *दी मिद्राश ओन मेल्खिजेदेक* कहा जाता है, ने गलत रूप में सिखाया कि मलिकिसिदक एक स्वर्गीय प्राणी था जो प्रायश्चित के दिन की घोषणा करने और परमेश्वर के लोगों के लिए अंतिम प्रायश्चित बनने हेतु अंत के दिनों में प्रकट होगा। इन सभी प्रकटनों के कारण इब्रानियों की पुस्तक के मूल पाठक इन या इन जैसी झूठी मान्यताओं को स्वीकार करने की परीक्षा में पड़ गए थे।

यहूदी समुदायों में प्रचलित ऐसी झूठी शिक्षाओं को पहचानना हमें यह समझने में सहायता करता है कि इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को ये उपदेश क्यों दिए कि वे इन शिक्षाओं का विरोध करें और यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें।

> मृत सागर के हस्तलेखों और इब्रानियों की पुस्तक की शिक्षा में कई रोचक समानताएँ हैं। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण शायद यह है कि दोनों समुदायों ने स्वीकार कर लिया था या मान लिया था कि वे अंत के समय में रह रहे थे, और कि परमेश्वर का अंतिम उद्धार आने ही वाला था। निस्संदेह, अंतर यह है कि इब्रानियों की पुस्तक में हम देखते हैं कि परमेश्वर का उद्धार आ पहुँचा है, जबकि कुमरान में — या मृत सागर के हस्तलेखों में — वे इसके किसी भी समय आने की अपेक्षा कर रहे थे। परंतु इन दोनों के बीच की सबसे तुलना मलिकिसिदक के चरित्र की भूमिका को लेकर है। निस्संदेह, इब्रानियों में लेखक मलिकिसिदक पर आधारित धर्मविज्ञान को विकसित करता है कि यीशु हारून की रीति पर महायाजक नहीं है, न ही पुराने नियम की परंपरा के अनुसार है, बल्कि वह तो मलिकिसिदक की रीति पर महायाजक है, क्योंकि हम देखते हैं कि मलिकिसिदक एक सच्चा महायाजक है जिसने उत्पत्ति की पुस्तक में अब्राहम से भेंट की — और मलिकिसिदक की तुलना इसीलिए है। मृत सागर के हस्तलेखों में एक हस्तलेख है — इसे 11 कुमरान मेल्खिज़ेदेक नाम से जाना जाता है क्योंकि इसकी खोज मृत सागर की 11वीं गुफा में हुई थी — जो मलिकिसिदक के पात्र को एक सामर्थी, स्वर्गीय, महिमामय, मसीह-सदृश्य चरित्र के रूप में दर्शाता है जो उद्धार लेकर आता है। इसलिए, यह निस्संदेह एक रोचक तुलना हैं क्योंकि इब्रानियों की पुस्तक में मसीह मलिकिसिदक का प्रतिरूप है, और मृत सागर के हस्तलेखों में मसीहा जैसा चरित्र बन जाता है। और इसलिए विद्वान इब्रानियों की पुस्तक में पाए जानेवाले मलिकिसिदक और मृत सागर के हस्तलेखों में पाए जानेवाले मलिकिसिदक के चित्रण के बीच के संबंध को लेकर उलझन में पड़ जाते हैं। यह बहुत ही रोचक तुलना है।
>
> — डॉ. मार्क एल. स्ट्रॉस

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इब्रानियों के उपदेशों का लक्ष्य केवल पाठकों से यही विनती करना नहीं था कि वे स्थानीय यहूदी शिक्षाओं को ठुकरा दें। बल्कि इससे भी अधिक, लेखक चाहता था कि वे यीशु को मसीह मानते हुए उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहें।

यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहना

अपने पाठकों को यीशु के प्रति विश्वासयोग्य सेवा में बुलाने के लक्ष्य को पूरा करने के लिए इब्रानियों के लेखक ने अपने उपदेशों को पाँच मुख्य भागों में संगठित किया। हम अपने अगले अध्याय में इनमें से प्रत्येक भाग को विस्तार से देखेंगे। परंतु यहाँ प्रत्येक भाग के मुख्य विषयों को सारगर्भित करना सहायक होगा।

इब्रानियों 1:1-2:18 में इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को स्वर्गदूतों के प्रकाशनों से बढ़कर मसीह की सर्वश्रेष्ठता को स्वीकार करने की बुलाहट दी।

हमने इस अध्याय में पहले यह दर्शाया था कि इब्रानियों की पुस्तक ने स्वर्गदूतों के बारे में झूठी मान्यताओं के विरूद्ध बात की थी। कई यहूदी लेखनों ने अक्सर स्वर्गदूतों को शक्तिशाली, महिमामय प्राणियों के रूप में ऊँचा उठाया था जो अपने से निम्न स्तर के मनुष्यों को ईश्वरीय प्रकाशन लाकर देते थे। स्वर्गदूतों के इस सम्मान ने उनके सामने एक गंभीर चुनौती पेश की जो मसीह का अनुसरण करते थे। यीशु मांस और लहू में प्रकट हुआ था। फ़िर स्वर्गदूतों के प्रकाशन की अपेक्षा उसने जो कहा, उसका अनुसरण कोई कैसे कर सकता है? इब्रानियों के लेखक ने पुराने नियम, और यीशु के जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, तथा महिमा में पुनरागमन से दर्शाने के द्वारा प्रत्युत्तर दिया कि वह वास्तव में स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है।

पद 3:1-4:13 में इब्रानियों का दूसरा मुख्य भाग प्रदर्शित करता है कि यीशु को मूसा के अधिकार से ऊँचा माना जाना चाहिए।

यह हर एक के लिए स्पष्ट था कि यीशु के अनुयायी ऐसे कोई भी बलिदान चढ़ाने संबंधी कार्य नहीं कर रहे थे, जो परमेश्वर ने मूसा के द्वारा ठहराए थे। स्थानीय यहूदी समुदाय मसीहियों को मूसा और उसके तरीकों की ओर मुड़ने के लिए कहते थे। इब्रानियों के लेखक ने यह पुष्टि करते हुए उत्तर दिया कि मूसा परमेश्वर का विश्वासयोग्य सेवक था। परंतु यीशु उससे भी महान था क्योंकि वह परमेश्वर का राजकीय पुत्र था।

मूसा और स्वर्गदूतों के बारे में बात करने के बाद इब्रानियों का लेखक पद 4:14-7:28 में मलिकिसिदक के महायाजक होने की ओर मुड़ा।

इस भाग में लेखक ने तर्क दिया कि यीशु मलिकिसिदक की रीति पर सर्वश्रेष्ठ राजकीय याजक था। स्पष्ट है कि स्थानीय यहूदी समुदाय चाहता था कि मूल पाठक यीशु को मसीहा के रूप में अस्वीकार कर दें क्योंकि उनकी मान्यताएँ थीं कि अंत दिनों में मलिकिसिदक महान राजकीय महायाजक के रूप में प्रकट होगा। इसके प्रत्युत्तर में इब्रानियों के लेखक ने दर्शाया कि यीशु वह सच्चा राजकीय याजक था जो अंत के दिनों में पाप का अनंत प्रायश्चित प्रदान करने के लिए प्रकट हुआ था।

पद 8:1-11:40 में इब्रानियों के लेखक ने यीशु में नई वाचा की श्रेष्ठता को स्पष्ट किया।

स्थानीय यहूदी समुदाय की शिक्षाओं ने मसीहियों के इस दावे पर सवाल उठाए कि यीशु यिर्मयाह के द्वारा प्रतिज्ञा की हुई वाचा की मध्यस्थता करने आया था। परंतु इब्रानियों के लेखक ने दर्शाया कि वास्तव में यीशु ही नई वाचा का मध्यस्थ है।

पद 12:1-13:25 में पाए जानेवाले अंतिम मुख्य भाग में इब्रानियों की पुस्तक ऐसी कई बातों को विस्तार से बताती है जिनमें पाठकों को व्यवहारिक धीरज को प्रयोग में लाना था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस भाग में उपदेशों की एक लंबी श्रृंखला, और इन उपदेशों की व्याख्याएँ पाई जाती हैं। स्थानीय यहूदी समुदाय और अन्य स्थानों से उनके विश्वास के प्रति आनेवाली बहुत सी चुनौतियों के प्रकाश में लेखक ने अपने पाठकों को प्रेरित करने और उनका उत्साह बढ़ाने के लिए लिखा। उसने उन्हें यीशु में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और आशीषों को याद दिलाने के द्वारा मसीहा के रूप में यीशु के प्रति विश्वासयोग्य रहने का उपदेश दिया।

> सकारात्मक रूप से कहें तो अपने कई उपदेशों के द्वारा इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों को धीरज के साथ स्थिर रहने के लिए उत्साहित कर रहा है। और कई बार उसकी भाषा बड़ी ही सौम्य, आग्रहपूर्ण, उत्साहित करनेवाली है, परंतु कई बार यह बहुत ही सीधी, और डर पैदा करनेवाली है। यह इब्रानियों 2 से ही आरंभ हो जाती है — "यदि पुराने नियम के पवित्र लोग भटककर दूर हो गए, तो हमारे लिए यह कितना खतरनाक है कि यदि हम, जो नई वाचा के उत्तराधिकारी हैं और प्रभु यीशु को जानते हैं, उस बड़े उद्धार की उपेक्षा कर दें जो हमें प्रदान किया गया है?" और ऐसा मजबूत तर्क, "यदि ऐसा है, तो फिर कितना अधिक," इस पुस्तक में बार-बार दिखाई देता है। और फिर ऐसे दो अनुच्छेद हैं जिन्हें इब्रानियों 6 और इब्रानियों 10 में अक्सर "धर्मत्याग के अनुच्छेदों" के रूप में दर्शाया जाता है जो हमें मसीह में मजबूत विश्वास का अंगीकार करके और कुछ समय तक उसका अनुसरण करके भटक जानेवाले लोगों के खतरे के विरूद्ध चेतावनी देते हैं। और इसलिए, पुराने नियम के ऐतिहासिक वर्णन को पढ़ते समय भी, जैसे कि इब्रानियों 3 के अंत में होता है, लेखक कहता है कि पुराने नियम के पवित्र लोगों के सदृश न बनो जिन्हें मिस्र में से छुड़ाया गया और गुलामी से बचाया गया परंतु वे धीरज न धरने के कारण कभी भी प्रतिज्ञा के देश में नहीं पहुँच सके। वे जंगल में मर मिटे। लगभग एक पूरी पीढ़ी नाश हो गई। और ऐसी पास्तरीय समानताएँ हैं जो दर्शाती हैं कि प्रोत्साहन के प्रति उसकी प्रेरणा केवल कोमल या मुलायम नहीं हैं, बल्कि उसमें गर्मजोशी और उत्साह और मसीह की महिमा को थामे रहना है ताकि उसके प्रति आकर्षित हुआ जा सके। परंतु इसके साथ ही इसमें खतरा और चेतावनी भी है कि यह एक गंभीर कार्य है और आप इसे हल्के में नहीं लेंगे।
>
> — डॉ. डी. ए. कार्सन

उपसंहार

इब्रानियों की पृष्टभूमि और उद्देश्य पर आधारित पर इस अध्याय में हमने इब्रानियों की पुस्तक की पृष्ठभूमि के साथ-साथ इसके लेखक, पाठकों और लिखे जाने के समय का अध्ययन किया है। हमने यह जांचने के द्वारा इब्रानियों के मूल उद्देश्य पर भी ध्यान दिया है कि लेखक ने किस प्रकार अपने पाठकों को स्थानीय यहूदी शिक्षाओं से फिरने और मसीहा के रूप में यीशु के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता की फिर से पुष्टि करने के लिए अपनी पुस्तक लिखी।

इब्रानियों की पुस्तक नए नियम की एक सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण पुस्तक है। इसमें इतना सब कुछ है कि हम इसकी शिक्षाओं को कभी पूरी तरह से समझ नहीं सकते। फिर भी, हम इन जटिल शिक्षाओं से कई रूपों में लाभ प्राप्त कर सकते हैं। मसीह के आधुनिक अनुयायियों के रूप में हम भी यीशु

के प्रति अपने समर्पण से समझौता करने के द्वारा इस जीवन में परेशानियों से बचने की परीक्षाओं का सामना करते हैं। परंतु यदि हम हमारे हृदयों को यह सुनने के लिए खोल दें कि इब्रानियों के लेखक ने किस प्रकार अपने मूल पाठकों को महत्वपूर्ण उपदेश दिए, तो हम देखेंगे कि यह कितना महत्वपूर्ण है कि हम किसी भी तरह के विरोध के सामने अपने विश्वास में दृढ़ खड़े रहें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।